# "भारत छोड़ो आंदोलन 1942 ई."

B.A - SEMESTER VI  Paper - 13th  Guess Question (4)

अप्रैल 1942 में क्रिप्स मिशन के असफल होने के लगभग चार माह बाद ही स्वतंत्रता के लिए भारतीयों का तीसरा जन-आंदोलन प्रारंभ हो गया। इसे 'भारत छोड़ो आंदोलन' के नाम से जाना गया।

8 अगस्त, 1942 को बंबई में हुई 'अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की बैठक में 'भारत छोड़ो आंदोलन' प्रस्ताव अंतिम रूप से पारित किया गया। इस प्रस्ताव में यह घोषणा की गई थी कि अब भारत में ब्रिटिश शासन की तत्काल समाप्ति भारत में स्वतंत्रता तथा लोकतंत्र की स्थापना के लिए अत्यंत ही आवश्यक हो गई है।

भारत छोड़ो आंदोलन कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्ताव पारित होने के बाद गाँधीजी ने कहा था, एक छोटा सा मंत्र है, जो मैं आपको देता हूँ, यह मंत्र है "करो या मरो"।

## भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि

भारत छोड़ो आंदोलन कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। आंदोलन प्रारंभ करने के पीछे कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार थे :—

(i) सर्वप्रथम क्रिप्स - योजना से ब्रिटिश सरकार का रवैया स्पष्ट हो गया था। क्रिप्स प्रस्ताव के माध्यम से सरकार यह साबित करना चाहती थी कि कांग्रेस भारत की आम जनता की प्रतिनिधि संस्था नहीं है। भारत में एकता का अभाव है। अतः सत्ता का हस्तांतरण संभव नहीं है।

(ii) भारत पर जापानी आक्रमण की आशंका बढ़ गई थी। ऐसी स्थिति में गांधीजी ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने से पहले सत्ता भारतीयों को

रूप में स्थापित करने के लिए अगस्त आंदोलन प्रारंभ किया।

(iii) पूर्वी बंगाल में सरकार ने आतंक का राज्य कायम कर रखा था। सैनिकों को रखने के लिए बलपूर्वक आम-लोगों से घर खाली करवा दिया गया था। बिना मुआवजा दिये भूमि अर्जित कर ली गई थी। सरकार की तानाशाही के विरोध में एक व्यापक जन आंदोलन शुरू करना अनिवार्य हो गया था।

(iv) युद्धकाल में भारत की स्थिति संकटपूर्ण बन गयी थी। मूल्य में बेतहाशा वृद्धि हुई। अतः आर्थिक असंतोष हिंसक क्रांति का रूप ले सकता था। जनसाधारण को जीवनयापन के लिए अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था।

उपरोक्त परिस्थितियों में, जब द्वितीय विश्वयुद्ध जारी था। औपनिवेशिक देशों के नागरिक स्वतंत्रता के प्रति जागरूक हो रहे थे और कई देशों में साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद के खिलाफ आंदोलन तेज होते जा रहे थे, पर आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान काकोरी-कांड के पंद्रह साल बाद 9 अगस्त, 1942 ई० को गांधीजी के आह्वान पर पूरे देश में एक साथ प्रारंभ हुआ।

## आंदोलन का प्रारंभ

9 अगस्त, 1942 को सुबह ही कांग्रेस के अधिकांश नेता गिरफ्तार कर लिये गये और इन्हें देश के अलग-अलग भागों में जेल में डाल दिया गया, साथ ही कांग्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

देश के प्रत्येक भागों में हड़तालों और प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। अंग्रेज सरकार के द्वारा पूरे देश में गोलीबारी, लाठीचार्ज और गिरफ्तारियां की गयी। लोगों का गुस्सा भी हिंसक गतिविधियों में बदल गया था। लोगों ने सरकारी संपत्तियों पर हमले किये, रेलवे पटरियों को उखाड़ दिया और डाक व तार व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दिया।

अनेक स्थानों पर पुलिस और जनता के बीच संघर्ष भी हुआ। सरकार ने आंदोलन से संबंधित समाचारों के प्रकाशित होने पर रोक लगा दी।

1942 के अंत तक लगभग 60,000 लोगों को जेल में डाल दिया गया और कई हजार मारे गये। मारे गये लोगों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे। बंगाल के तामलुक में 73 वर्षीय मतंगिनी हाजरा, असम के गोहपुर में 13 वर्षीय कनकलता बरुआ, बिहार के पटना में सात युवा छात्र व सैकड़ों अन्य प्रदर्शन में भाग लेने के दौरान गोली लगने से मारे गये।

देश के कई भाग जैसे, उत्तर प्रदेश में बलिया, बंगाल में तामलूक, महाराष्ट्र में सतारा, कर्नाटक में धारवाड़ और उड़ीसा में तालचर व बालासोर ब्रिटिश शासन से मुक्त हो गये और वहां के लोगों ने स्वयं की सरकार का गठन किया। जय प्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली, एस.एम. जोशी, राम मनोहर लोहिया और अन्य कई नेताओं ने लगभग पूरे युद्ध काल के दौरान क्रांतिकारी गतिविधियों का आयोजन किया।

युद्ध के वर्ष लोगों के लिए भयानक संघर्ष के दिन थे। ब्रिटिश सेना और पुलिस के दमन के कारण पैदा गरीबी के अलावा बंगाल में गंभीर अकाल पड़ा जिसमें लगभग 30,00000 लाख लोग मारे गये।

## मूल्यांकन

भारत छोड़ो आंदोलन स्वतंत्रता के अंतिम चरण को इंगित करता है। इसने गांव से लेकर शहर तक ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी। इससे भारतीय जनता के अंदर आत्मविश्वास बढ़ा और समानांतर सरकारों के गठन से जनता काफी उत्साहित हुई। इसमें महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और जनता ने नेतृत्व अपने हाथ में लिया, जो राष्ट्रीय आंदोलन के परिपक्व चरण को सूचित करता है। इस आंदोलन के दौरान पहली बार राजाओं को जनता की संप्रभुता स्वीकार करने को कहा गया। 1942 ई० के विद्रोह के बाद ब्रितानी शासकों के दिमाग में यह बात आ गई कि भारत में उनके शासन के दिन गिने-चुने शेष हैं।